पशुपालक मित्र 4(4): 3-5; अक्टूबर, 2024 चौधरी एवं वाइज़
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुपालन: कृषि समृद्धि और मानव कल्याण का अभिन्न अंग

डॉ. करिश्मा चौधरी[1] एवं डॉ. हिना अशरफ वाइज़[2]

[1]पीएचडी और [2]सह आचार्य, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविधालय, वल्लभनगर, उदयपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। पशुधन ने छोटे कृषक परिवारों की आय में 16% का योगदान दिया, जबकि सभी ग्रामीण परिवारों के लिए यह औसत 14% है । पशुधन ग्रामीण समुदाय के दो-तिहाई लोगों को आजीविका प्रदान करता है साथ ही यह भारत में लगभग 8.8% आबादी को रोजगार भी प्रदान करता है।विभिन्न पशु जैसे की गाय ,भैंस, भेड़ और बकरी, दूध और दूध से बने उत्पादों, जैसे मक्खन, पनीर, दही और पनीर के प्राथमिक आपूर्तिकर्ता हैं।अपने उच्च पोषण तत्वों और प्रोटीन के कारण , कई जानवरों जैसे मुर्गियाँ , बकरियाँ, बत्तखें, सूअर और भैंसों का उपयोग मांस के लिए किया जाता है।आग लगने की संभावना वाले सूखे झाड़ियों को कई जानवर चबाकर खा जाते हैं , जिससे कृषि भूमि पर खरपतवारों के फैलाव को रोकने में मदद मिलती है। इससे चरम परिस्थितियों में होने वाले जोखिम और चोट को कम किया जा सकता है फलस्वरुप , भूमि प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका

पशुधन किसानों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में किसान मिश्रित खेती प्रणाली को अपनाते हैं , यानी फसल और पशुधन का संयोजन , जहाँ एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है , जिससे संसाधन दक्षता का एहसास होता है। मनुष्य को पशुपालन से लाभ होता है क्योंकि यह उच्च पोषक तत्वों वाले खाद्य उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है। पशुधन किसानों की विभिन्न तरीकों से सेवा करते हैं-

1. **आय** : भारत में पशुधन कई परिवारों के लिए सहायक आय का स्रोत है , खासकर उन गरीब और छोटे परिवारों के लिए जो कुछ ही पशु रखते हैं। गाय और भैंस के दूध की बिक्री के माध्यम से पशुपालकों को नियमित आय प्रदान करती है। भेड़ और बकरी जैसे पशु विवाह , बीमार व्यक्तियों के उपचार , बच्चों की शिक्षा , घरों की मरम्मत आदि जैसी आपात स्थितियों के दौरान आय के स्रोत के रूप में काम आते हैं। पशु चलते-फिरते बैंक और संपत्ति के रूप में भी काम करते हैं जो मालिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
2. **रोजगार**: भारत में बहुत से लोग कम साक्षर और अकुशल हैं साथ ही अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। लेकिन मौसमी प्रकृति की कृषि होने की वजह से इनको साल में अधिकतम 180 दिन ही रोजगार मिल सकता है। भूमिहीन और कम भूमि वाले लोग कम कृषि मौसम में अपने श्रम का उपयोग करने के लिए पशुधन पर निर्भर रहते हैं।पशुपालन बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देता है , जिससे लोगों और देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सहायता मिलती है।
3. **भोजन:** पशुधन उत्पाद जैसे दूध , मांस और अंडे पशुपालकों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। 2022-23 के दौरान दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 459

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

ग्राम/दिन है; अंडे की उपलब्धता 101/वर्षऔर माँस की उपलब्धता 11 किलोग्राम /वर्ष है। मछली का सेवन , जिसमें ओमेगा- 3 फैटी एसिड , डीएचए और विटामिन डी शामिल हैं , व्यक्ति को अधिक खुश और स्वस्थ बनाता है।

4. **सामाजिक सुरक्षा** : पशु मालिकों को समाज में उनकी स्थिति के संदर्भ में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिन परिवारों के पास पशु हैं , खासकर भूमिहीनों के पास , वे उन परिवारों से बेहतर स्थिति में हैं जिनके पास पशु नहीं हैं। देश के विभिन्न भागों में विवाह के दौरान पशुओं को उपहार में देना एक बहुत ही आम बात है। पशुओं का पालन-पोषण भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है। पशुओं का उपयोग विभिन्न सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता है। गृह प्रवेश समारोहों के लिए गायों का उपयोग किया जाता है ; त्यौहारों के मौसम में बलि के लिए मेढ़े , हिरन और मुर्गे की पूजा की जाती है ; विभिन्न धार्मिक कार्यों के दौरान बैल और गायों की पूजा की जाती है। कई मालिकों को अपने पशुओं से लगाव हो जाता है।
5. **मसौदा** : बैल भारतीय कृषि की रीढ़ हैं। किसान , खास तौर पर सीमांत और छोटे किसान , खेती की जुताई, ढुलाई और उत्पादन तथा इनपुट दोनों के परिवहन के लिए बैलों पर निर्भर रहते हैं।
6. **गोबर और खाद** : ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कई प्रयोजनों के लिए किया जाता है , जिसमें ईंधन (गोबर के उपले) , उर्वरक (खेत की खाद) और प्लास्टरिंग सामग्री (गरीब आदमी का सीमेंट) शामिल हैं। पशुओं के मलमूत्र , रक्त और हड्डियों का उपयोग खाद के रूप में किया जाता है। फसल की पैदावार और उत्पादन बढ़ाने के लिए खाद को खेतों में डाला जाता है। इसका उपयोग आग लगाने और दीवार और फर्श के प्लास्टर के रूप में भी किया जाता है। गैर-मानव श्रम श्रमिक पशुओं द्वारा प्रदान किया जाता है। उन्हें खेतों की जुताई, उत्पाद वितरित करने और सेना में सेवा करने के लिए नियोजित किया जाता है ।

पशुपालन का मानव कल्याण मे महत्व

मनुष्य को पशुपालन से लाभ होता है क्योंकि यह उच्च पोषक तत्वों वाले खाद्य उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है। वे उच्च खाद्य मांग की व्यावसायिक मांगों को पूरा करते हैं। उन्हें दुधारू पशु के रूप में जाना जाता है क्योंकि वे हमें प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर दूध देते हैं।

पशुपालन उन अन्य जानवरों के लिए भी महत्वपूर्ण है जिन पर मनुष्य अंडे और मांस के लिए निर्भर करता है, जैसे मुर्गियाँ, बत्तख, गीज़, बकरी, मछली, आदि। उन्हें मांस के लिए भी पाला जाता है , जिसमें उच्च प्रोटीन, आयरन, लिपिड, विटामिन बी12 और जिंक का स्तर होता है। ये पोषक तत्व चयापचय दर बढ़ाने, तृप्ति बढ़ाने और भूख कम करने के लिए आवश्यक हैं।

पशु उत्पाद फसलों की तुलना में कई लाभ प्रदान करते हैं।

उदाहरण के लिए:
1. मांस और दूध का उत्पादन वर्ष भर किया जा सकता है, जो अनाज, फल और सब्जियों की तुलना में कम मौसमी होते हैं।
2. पशुओं, विशेषकर छोटे पशुओं को, आवश्यकता पड़ने पर भोजन या आय के लिए मारा जा सकता है।
3. दूध और मांस दोनों को संरक्षित किया जा सकता है - दूध को मक्खन, दही या पनीर के रूप में, तथा मांस को सुखाकर, सुखाकर, धूम्रपान करके और नमक लगाकर संरक्षित किया जा सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

निष्कर्ष

जैसे-जैसे दुनिया की आबादी बढ़ती है और जीवन स्तर बढ़ता है , वैसे-वैसे दूध, अंडे और मांस की मांग भी बढ़ती है। पारंपरिक पशु प्रजनन और देखभाल प्रक्रियाओं के अलावा , गुणवत्ता में सुधार और उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए। पशुपालन में पशुधन पशुओं के प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग शामिल है।इसके अलावा , इसमें आहार, प्रजनन और रोग नियंत्रण प्रबंधन जैसे विभिन्न कारक शामिल हैं , जो पशु उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने में सहायता करते हैं।